Success Story 2017-18

सफल एवं नवाचारी कृषकों के कार्यों का विवरण

जिन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित किया गया है :– **फसल उत्पादन, मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन, मछली पालन**

नवाचारक कृषक का विवरण

1- **नाम** – श्री इतवारी राम ग्राम – चंदैनी पोष्ट – दैहानडीह तहसील – कवर्धा जिला – कबीरधाम (छ.ग.)

2- शैक्षणिक योग्यता (पांचवी/आठवीं/हाई स्कूल/स्नातक/स्नातकोत्तर/अन्य)– आठवीं

3- **वार्षिक आय–** 1.50 लाख

4- **कुल कार्य अनुभव (वर्षों में)**– तीन वर्ष

5- **नवाचार कार्य का प्रारम्भ वर्ष**– 2013

6- **कार्यक्षेत्र**– मछली सह बत्तख पालन

7- **कुल वार्षिक बिक्री**– 91300/–

8- **आगामी विस्तार योजना**– कड़कनाथ मुर्गी एवं बकरी पालन करना

9- **रोजगार में लगे कर्मचारियों की संख्या**–05

10- **सम्पर्क विवरण (मोबा. नं./दूरभाष नं./ईमेल)**– 89648 60498

बिजनेस मॉडल : मुर्गी पालन +सब्जी उत्पादन + उद्यानिकी + मत्स्य पालन + फसल उत्पादन + बकरा पालन

नवाचार का विवरण (फोटो संलग्न करें) : श्री इतवारी राम जी कृषि कार्यो में संलग्न है, इन्होंने कृषि के साथ– साथ अतिरिक्त आमदनी के लिए, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण लेकर मछली सह बत्तख पालन एवं मछली बीज क्रय कर व्यावसाय की षुरुआत की फिर इन्होने मछली के साथ बत्तख पालन प्रारंभ किया। जिससे इन्हे बहुत मुनाफा हुआ, खाद एवं परिपूरक आहार का लागत में कमी आई एवं आय में वृद्वि हुई इसके साथ ही साथ उद्यानिकी में अमरुद की खेती करते है जिन्हे बेचकर मुनाफा कमाते हैं साथ ही बकरा पालन किये है जिन्हे वह ब्रिड इन्प्रुमेंट के लिए उपयोंग करते है। देषी मुर्गी का पालन करते है जिससे अण्डे एवं मुर्गी बेचकर अतिरिक्त लाभ कमाते हैं। कृशि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के तकनिकी मार्गदर्षन से प्रेरित होकर नवीन तकनिकों को खेती में अमल कर लागत में कमी करते हुए आय प्राप्त कर लाभ कमा रहे है।

विवरण	अंडा /मांस /सब्जिया उत्पादन ;ज्ञहद्ध
कुल उत्पादन **(बत्तख)**	–
कुल उत्पादन **(मुर्गी)**	140
कुल उत्पादन **(मछली)**	50
सब्जियां **(टमाटर, मिर्ची, भिन्डी, बैगन, सेम, करेला इत्यादि)**	250
दुध उत्पादन	720
कुल बिक्री	91300
लागत	20000
शुद्ध लाभ	71300

नवाचार तकनीकी का प्रभाव :. समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने के निम्नलिखित प्रभाव हुए।

1. उपलब्ध संसाधनो का प्रभावकारी उपयोग।
2. उत्पादन लागत में कमी से मजबूत आर्थिक स्थिति ।
3. उर्वरकों का कम उपयोग फसलउत्पादन में वृद्वि।
4. महिलाओं की भागीदारी से व्यवसाय में वृद्वि।
5. मुर्गी एवं अण्डा प्रोटीन का अच्छा स्त्रोत होने के कारण कुपोषण से बचाव

विशिष्ट पहचान/ईनाम :–

आने वाली प्रमुख समस्यायें (मुद्दे)

(बिन्दुवार जानकारी दें)

1. मुर्गी शेड की आवश्कता है
2. बकरी पालन करना है

Success Story 2017-18

सफल एवं नवाचारी कृषकों के कार्यों का विवरण

जिन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित किया गया है :– फसल उत्पादन सह पषु पालन

नवाचारक कृषक का विवरण

11- **नाम** – श्री दौलत राम साहू ग्राम – लिमो पोष्ट – लिमो तहसील – कवर्धा जिला – कबीरधाम (छ.ग.)

12- शैक्षणिक योग्यता (पांचवी/आठवीं/हाई स्कूल/स्नातक/स्नातकोत्तर/अन्य) – आठवीं

13- **वार्षिक आय–** 8.00 लाख

14- **कुल कार्य अनुभव (वर्षों में)**– 6 वर्ष

15- **नवाचार कार्य का प्रारम्भ वर्ष**– 2011

16- **कार्यक्षेत्र**– पशु पालन

17- **कुल वार्षिक बिक्री**– 850000/–

18- **आगामी विस्तार योजना**– भैंस पालन करना

19- **रोजगार में लगे कर्मचारियों की संख्या**–07

20- **सम्पर्क विवरण (मोबा. नं./दूरभाष नं./ईमेल)**– 94790 53508

बिजनेस मॉडल : पषु पालन + सब्जी उत्पादन + फसल उत्पादन

नवाचार का विवरण (फोटो संलग्न करें) : नवोन्वेशी कृशक श्री दौलत राम साहू जी पशु पालन कर रहे हैं इनके पास विभिन्न नस्लों की गाय उपस्थित है जिसमें गिर – 1, साहीवाल – 5, संकर जर्सी – 3, एच. एफ, – 7 एवं 5 देषी नस्ल की है कुल मिलाकर 21 गाय एवं 13 बछडे है कुल मिलाकर प्रति दिन 150 लीटर दुध प्राप्त होता है पषुओं के चारे के लिए हरा चारा जैसे नेपियर घास, बरसीम, अजोला, चरी इत्यादि की व्यवस्था भी की गई है इनके पास चाप कटर मषीन है जिससे वे पैरा काट कर साथ ही विटामिन एवं मिनरल पावडर मिलाकर पषुओं को खिलाते हैं। साल भर चारा उत्पादन करने से चारे की लागत में कमी आती है एवं प्षुओं को सालभर हरा चारा उपलब्ध होता है जिससे दुध उत्पादन में गिरावट नहीं आती इसके अतिरिक्त गन्ने की फसल लगाते हैं जिससे गन्ने की पत्तियों का भी उपयोग चारे के रुप में करते हैं कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा आयोजित विभिन्न प्रषिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर व कृशि वैज्ञानिकों पषुपालन वैज्ञानिक के मार्गदर्षन में व्यवसाय सुचारु रुप से चला कर आय प्राप्त कर रहे है।

विवरण	दुध उत्पादन ;स्पजमतद्ध
कुल उत्पादन (दुध)	80–120 प्रति दिन
कुल बिक्री	850000
लागत	500000
शुद्ध लाभ	350000

नवाचार तकनीकी का प्रभाव :. सालभर हरा चारा उत्पादन कर पषुओं को खिलाने से निम्नलिखित प्रभाव हुए।

1. पषुओं के दुध में वृद्वि
2. हरा चारा के उपयोग से बाजार के अन्य चारों की लागत में कमी ।
3. उपलब्ध संसाधनों का प्रभावकारी उपयोग।
4. उत्पादन लागत में कमी से मजबूत आर्थिक स्थिति।
5. कम लागत में अधिक उत्पादन।

विशिष्ट पहचान/ईनाम :– कृशि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा उत्कृट कार्य हेतु प्रषस्ति पत्र

आने वाली प्रमुख समस्यायें (मुद्दे)

(बिन्दुवार जानकारी दें)

1. केचुआ टैंक की आवश्कता है
2. गोबर गैस पलांट में सुधार करना है
3. अतिरिक्त अजोला टैंक का निर्माण